Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 11, Issue 1&2 - 2026, Pg. No. 1-11
Peer Reviewed Journal

Research Article

डिजिटल युग में हिंदी साहित्यिक पुस्तकों की उपेक्षा और युवा पाठकों की प्राथमिकताएँ: पूर्वी दिल्ली का क्षेत्रीय विश्लेषण

अपर्णा डायस
सुमित मोहन के. एम. (कृष्ण मोहन) विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202601

I N F O

E-mail Id:
aparnadias29@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0004-6992-572X
How to cite this article:
डिजिटल युग में हिंदी साहित्यिक पुस्तकों की उपेक्षा और युवा पाठकों की प्राथमिकताएँ: पूर्वी दिल्ली का क्षेत्रीय विश्लेषण, Anu: a, Mul, Int, Jour, *2026*; 11(1&2): 1-11.

Date of Submission: 2025-10-28
Date of Acceptance: 2026-01-10

A B S T R A C T

हिंदी साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों का आधार रहा है। यह केवल भाषा की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों की गहराई का प्रतीक है। किंतु तकनीकी युग के इस दौर में, जब जीवन का प्रत्येक क्षेत्र डिजिटल माध्यमों से जुड़ चुका है, तब साहित्यिक पुस्तकों के प्रति युवाओं की रुचि में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा गया है। मुद्रित पुस्तकों की जगह अब ई-पुस्तकों, श्रव्य पुस्तकों और इंटरनेट आधारित सामग्री ने ले ली है, जिससे पारंपरिक पठन संस्कृति प्रभावित हुई है।

यह अध्ययन पूर्वी दिल्ली क्षेत्र के 14 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं पर किया गया, जिसमें कुल 95 उत्तरदाताओं से प्राप्त विचारों के आधार पर विश्लेषण किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि युवाओं में साहित्यिक पुस्तकों के प्रति जिज्ञासा बनी हुई है, परंतु नियमित पठन की आदत में कमी आई है। बयालिस प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे कभी-कभी साहित्यिक पुस्तकें पढ़ते हैं, जबकि इक्कीस प्रतिशत युवाओं ने स्वीकार किया कि वे अब पुस्तकें नहीं पढ़ते। ई-पुस्तकों का आकर्षण उनकी सरल उपलब्धता, कम लागत और आधुनिकता के कारण बढ़ा है, किंतु इस सहजता ने साहित्यिक गहराई और एकाग्रता में कमी उत्पन्न की है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि साहित्यिक पुस्तकों को आधुनिक तकनीकी माध्यमों में प्रस्तुत किया जाए, जैसे श्रव्य पुस्तकों, साहित्यिक अनुप्रयोगों और सामाजिक मंचों के माध्यम से, तो हिंदी साहित्य को पुनः युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाया जा सकता है। डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए चुनौती के साथ-साथ एक नया अवसर भी प्रस्तुत करता है, जिससे उसकी परंपरा आधुनिक रूप में जीवित रह सकती है।

मुख्य शब्द: हिंदी साहित्य, डिजिटल युग, साहित्यिक पुस्तकें, युवा पाठक, पठन संस्कृति

Copyright (c) 2026: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मानवीय चेतना का दर्पण रहा है। इसने समाज की संवेदनाओं, विचारों, परंपराओं और संघर्षों को शब्दों में पिरोकर जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। साहित्य ने युग-युगांतरों से व्यक्ति और समाज के बीच एक गहरे भावनात्मक संबंध को स्थापित किया है। परंतु वर्तमान समय में जब मानव जीवन पूरी तरह तकनीकी संसाधनों पर निर्भर हो गया है, तब साहित्य और उसके पाठकों के संबंध की प्रकृति भी परिवर्तित होती जा रही है। आज का युग डिजिटल युग कहलाता है, जहाँ जानकारी का प्रत्येक स्रोत इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुड़ा है। इसी के साथ पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों के स्थान पर ई-पुस्तकें, ऑडियो सामग्री और ऑनलाइन मंचों का चलन तेजी से बढ़ा है। इस तकनीकी विस्तार का प्रभाव हिंदी साहित्य और साहित्यिक पुस्तकों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अब पाठक पुस्तकालय या पुस्तक की दुकान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह मोबाइल, टैबलेट या कंप्यूटर के माध्यम से साहित्य तक पहुँच बना सकता है। परंतु इस सहजता के साथ-साथ साहित्य के प्रति आत्मीयता, एकाग्रता और गहराई में कमी देखी जा रही है। विशेष रूप से युवाओं में, जो हिंदी साहित्य के प्रमुख पाठक वर्ग रहे हैं, अब साहित्यिक पुस्तकों के प्रति वही आकर्षण नहीं रह गया। वे अब त्वरित मनोरंजन, सामाजिक माध्यमों की सामग्री और दृश्य कथाओं की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। फिर भी यह परिवर्तन पूरी तरह नकारात्मक नहीं कहा जा सकता। डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य के समक्ष नयी संभावनाएँ भी प्रस्तुत की हैं। यदि साहित्यिक पुस्तकों को आधुनिक माध्यमों में आकर्षक और संवादात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो यह नई पीढ़ी के बीच पुनः लोकप्रिय हो सकता है। यही इस शोध का मूल उद्देश्य है - यह समझना कि डिजिटल युग में हिंदी साहित्य की उपेक्षा क्यों बढ़ी और किस प्रकार तकनीकी युग के पाठकों की प्राथमिकताएँ बदल रही हैं।

शोध समस्या का विवेचन

हिंदी साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं का जीवंत प्रतीक है। यह केवल मनोरंजन या लेखन की परंपरा नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाली एक सृजनात्मक धारा रही है। किंतु आधुनिक काल में विज्ञान और तकनीक की तीव्र प्रगति ने मानव जीवन की गति और प्राथमिकताओं को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। आज का युग डिजिटल युग है, जहाँ ज्ञान, सूचना और मनोरंजन के साधन सब कुछ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में सिमट गए हैं। इस परिवर्तन ने साहित्यिक पुस्तकों की भूमिका को गहराई से प्रभावित किया है। पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों के स्थान पर अब ई-पुस्तकें, श्रव्य-पुस्तकें, वेब मंचों पर लेखन तथा सामाजिक माध्यमों की लघु सामग्री ने युवाओं का ध्यान आकर्षित किया है। परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य के अध्ययन, पठन और उसकी सामाजिक उपयोगिता में कमी देखी जा रही है। विशेष रूप से युवाओं में साहित्यिक पुस्तकों के प्रति एक प्रकार की अरुचि विकसित होती जा रही है, जो हिंदी साहित्य की स्थायी परंपरा के लिए चिंता का विषय है।

यह शोध समस्या इस प्रश्न को गहराई से समझने का प्रयास करती है कि डिजिटल युग ने हिंदी साहित्यिक पुस्तकों और युवाओं के बीच किस प्रकार की दूरी उत्पन्न की है। क्या यह दूरी केवल तकनीकी सहजता का परिणाम है या फिर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का भी प्रभाव इसमें निहित है। साथ ही, यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि क्या डिजिटल माध्यमों के उचित प्रयोग से हिंदी साहित्य को युवाओं में पुनः लोकप्रिय बनाया जा सकता है। अतः इस अध्ययन की मूल समस्या यह है कि डिजिटल युग में साहित्यिक पुस्तकों के प्रति युवाओं की बदलती प्राथमिकताओं का विश्लेषण किया जाए और यह ज्ञात किया जाए कि किस प्रकार तकनीकी विकास ने हिंदी साहित्य की स्वीकृति, प्रभाव और प्रसार को प्रभावित किया है।

साहित्यिक समीक्षा

वर्तमान समय में साहित्य और तकनीक का संबंध अत्यंत गहराई से जुड़ गया है। जब मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी विकास ने हस्तक्षेप किया है, तब साहित्यिक संस्कृति भी इससे अछूती नहीं रही। हिंदी साहित्य, जो कभी मुद्रित पन्नों और पाठक-लेखक के आत्मीय संवाद के माध्यम से विकसित हुआ था, अब डिजिटल मंचों, ई-पुस्तकों और सामाजिक माध्यमों के जरिए प्रसारित हो रहा है। इस बदलते परिदृश्य ने साहित्यिक पुस्तकों के अध्ययन, प्रसार और पाठकीय संवेदना को नई दिशा दी है। यद्यपि यह दिशा कई मायनों में लाभकारी है, किंतु इससे पारंपरिक साहित्यिक संस्कृति पर गहरा प्रभाव भी पड़ा है। इस संदर्भ में अनेक विद्वानों और शोधकर्ताओं ने अपने-अपने अध्ययन प्रस्तुत किए हैं, जिनसे इस विषय की स्पष्टता बढ़ती है।

डॉ. नलिनी सिन्हा (2018) ने अपने शोध "डिजिटल माध्यम और हिंदी साहित्य" में यह प्रतिपादित किया कि ई-पुस्तकें हिंदी साहित्य को सुलभ तो बना रही हैं, परंतु उन्होंने पठन की गहराई और आत्मीयता को कम किया है। डॉ. गोपाल राय (2019) ने यह विश्लेषण किया कि तकनीकी सुविधाओं ने साहित्यिक पुस्तकों के पाठन को गति दी है, किंतु गहन अध्ययन की प्रवृत्ति क्षीण हुई है। डॉ. सुधा मिश्रा (2020) के अध्ययन "डिजिटल युग में साहित्यिक चेतना का स्वरूप में यह निष्कर्ष दिया गया कि युवा वर्ग अब पारंपरिक पुस्तकों की तुलना में त्वरित और दृश्य माध्यमों को अधिक प्राथमिकता दे रहा है। डॉ. राकेश श्रीवास्तव (2021) का मत है कि यदि साहित्य को तकनीकी भाषा में प्रस्तुत किया जाए, तो यह नई पीढ़ी के लिए आकर्षक रूप ले सकता है।

फैयाज़ अहमद लोन और रेफहात-उन-निसा शाह (2019) के सर्वेक्षण में यह पाया गया कि किशोर वर्ग के अधिकांश पाठक अब साहित्यिक विधाओं से हटकर लघु लेखन और आधुनिक वेब-सामग्री की ओर झुक रहे हैं। सुभवीरापंडियन और प्रियांका सिन्हा (2022) के अनुसार डिजिटल साक्षरता ने छात्रों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाया है, परंतु इससे उनकी पारंपरिक पठन-संवेदना में कमी आई है। डॉ. सुधीर कुमार (2021) ने अपने शोध "डिजिटल माध्यमों में हिंदी साहित्य की उपस्थिति" में यह तथ्य रखा कि सोशल मीडिया ने साहित्य के प्रसार में सहयोग तो किया है, परंतु उसकी गंभीरता और साहित्यिक गरिमा को कम किया है। इसी दिशा में डॉ. सुषमा पाठक (2022) का मत है कि डिजिटल मंचों ने हिंदी साहित्य के नए पाठक तो दिए हैं, परंतु उनमें स्थायित्व और चिंतन की गहराई का अभाव है। डॉ. राजनी शर्मा (2023) के अध्ययन "आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीकी चुनौतियाँ" में यह निष्कर्ष दिया गया कि डिजिटल युग ने साहित्य को एक नया माध्यम दिया है, परंतु साहित्यिक पुस्तकों की आत्मा अब भी मुद्रित रूप में ही जीवित है।

इन सभी शोध-अध्ययनों का सामूहिक विश्लेषण यह दर्शाता है कि डिजिटल युग ने हिंदी साहित्यिक पुस्तकों की पहुँच तो बढ़ाई है, किंतु पठन की गंभीरता, संवेदना और गहराई में ह्रास हुआ है। फिर भी विद्वानों का यह भी मत है कि यदि तकनीकी साधनों का प्रयोग रचनात्मकता और संवाद की दृष्टि से किया जाए, तो यह युग हिंदी साहित्य को नए स्वरूप में पुनः जीवंत बना सकता है।

शोध पद्धति

इस शोध का मूल उद्देश्य डिजिटल युग में हिंदी साहित्यिक पुस्तकों की उपेक्षा तथा युवा पाठकों की बदलती साहित्यिक प्राथमिकताओं का विश्लेषण करना है। वर्तमान युग में तकनीकी प्रगति ने न केवल जीवनशैली को, बल्कि पठन-पाठन की आदतों को भी परिवर्तित कर दिया है। इसी परिवर्तन को समझने के लिए इस अध्ययन में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों पद्धतियों का उपयोग किया गया है, ताकि तथ्यात्मक आंकड़ों के साथ-साथ विचारगत दृष्टिकोण को भी समाहित किया जा सके। यह शोध पूर्वी दिल्ली क्षेत्र में किया गया, जहाँ विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से संबंधित युवा वर्ग उपस्थित है। इस क्षेत्र का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यहाँ तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और साहित्यिक जागरूकता दोनों ही स्तरों पर विविधता पाई जाती है। अध्ययन के अंतर्गत 14 से 30 वर्ष आयु वर्ग के कुल 95 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया, जिनमें छात्र, पेशेवर और शिक्षित बेरोजगार युवा सम्मिलित थे। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना पद्धति अपनाई गई, जिससे परिणामों की वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित हो सके। डेटा संग्रह के लिए प्रश्नावली को मुख्य उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया, जिसमें साहित्यिक पुस्तकों की पठन आदत, ई-पुस्तकों की उपयोगिता, डिजिटल माध्यमों का प्रभाव और साहित्यिक रुचि जैसे विषयों पर आधारित दस प्रश्न सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त कुछ चयनित प्रतिभागियों से अनौपचारिक साक्षात्कार भी किए गए, ताकि उनके अनुभवों और दृष्टिकोण को गहराई से समझा जा सके।

प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय और विवेचनात्मक दोनों पद्धतियों से किया गया। सर्वेक्षण के परिणामों को प्रतिशत के आधार पर वर्गीकृत किया गया तथा उन्हें आलेखों और चार्टों के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे निष्कर्षों की स्पष्टता बढ़ सके। यह अध्ययन मुख्यतः पूर्वी दिल्ली क्षेत्र तक सीमित रहा, अतः इसके निष्कर्ष संपूर्ण हिंदी भाषी क्षेत्र के लिए सामान्य नहीं माने जा सकते। फिर भी यह शोध इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है, जो यह समझने का आधार प्रदान करता है कि डिजिटल युग में साहित्यिक पुस्तकों के प्रति युवाओं की रुचि क्यों घट रही है और किस प्रकार आधुनिक तकनीक इस पठन-संस्कृति को प्रभावित कर रही है।

प्रश्नावली आधारित विश्लेषण (95 प्रतिभागियों पर आधारित)

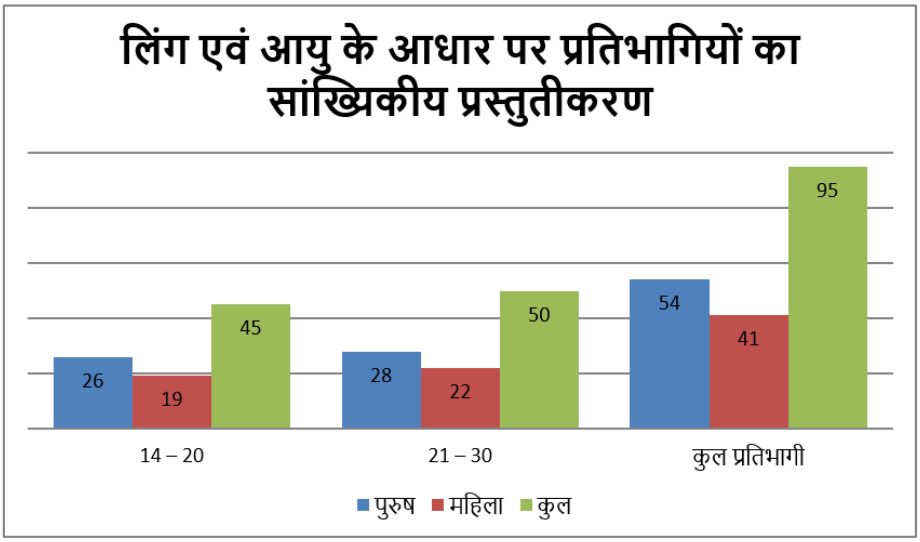

प्रतिभागियों का लिंग एवं आयु वर्ग के अनुसार वर्गीकरण				
क्रमांक	**आयु वर्ग (वर्ष)**	**पुरुष**	**महिला**	**कुल**
1	14 – 20	26	19	45
2	21 – 30	28	22	50
कुल प्रतिभागी		**54**	**41**	**95**

तालिका -1

तालिका विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में कुल 95 प्रतिभागियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 54 पुरुष (57%) और 41 महिला (43%) थीं। आयु वर्ग के अनुसार देखा जाए तो 14 से 20 वर्ष की आयु के अंतर्गत 45 प्रतिभागी (26 पुरुष व 19 महिला) और 21 से 30 वर्ष की आयु में 50 प्रतिभागी (28 पुरुष व 22 महिला) सम्मिलित हुए।

यह आँकड़े इस तथ्य को उजागर करते हैं कि सर्वेक्षण में दोनों लिंगों का लगभग संतुलित प्रतिनिधित्व रहा, जिससे अध्ययन के परिणाम अधिक वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय बनते हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट होता है कि युवाओं का बड़ा वर्ग (21–30 वर्ष आयु समूह) साहित्यिक प्रवृत्तियों और डिजिटल माध्यमों के प्रयोग के अध्ययन के लिए अधिक उपयुक्त माना जा सकता है। इस समूह के प्रतिभागी आधुनिक तकनीक से अधिक परिचित हैं, जबकि 14–20 वर्ष की आयु के प्रतिभागी साहित्यिक रुचि के निर्माण की प्रक्रिया में हैं।

इस प्रकार यह वर्गीकरण अध्ययन को संतुलित आधार प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि हिंदी साहित्य की पठन-संस्कृति का विश्लेषण आयु एवं लिंग दोनों दृष्टियों से व्यापक और तुलनात्मक रूप में किया जा सके।

प्रश्न:1. क्या आप नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ते हैं?

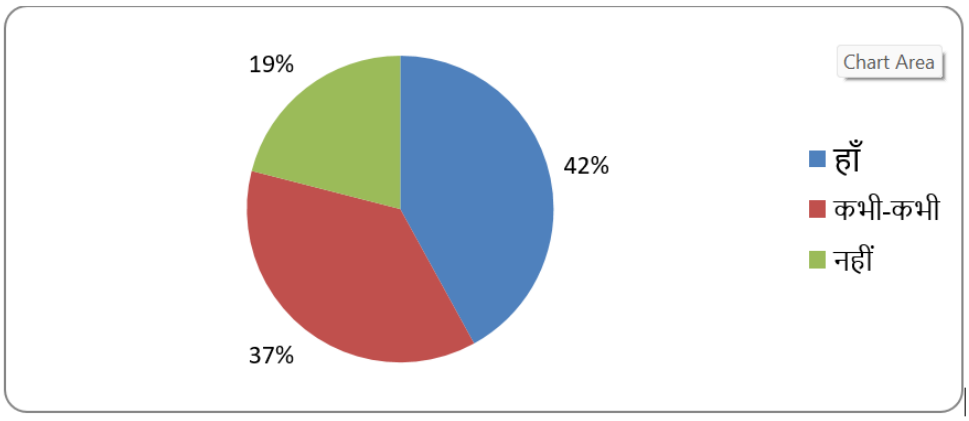

विश्लेषण

उपरोक्त चित्र में 95 प्रतिभागियों के उत्तरों के आधार पर किए गए सर्वेक्षण का प्रतिशतात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस प्रश्न का उद्देश्य यह जानना था कि आज के डिजिटल युग में युवाओं की साहित्यिक पुस्तकों के प्रति वास्तविक रुचि किस स्तर पर है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, कुल 42 प्रतिशत प्रतिभागियों ने यह स्वीकार किया कि वे नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ते हैं। यह वर्ग अभी भी पारंपरिक पठन-संस्कृति से जुड़ा हुआ है और साहित्यिक पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान एवं मनोरंजन प्राप्त करता है। वहीं 37 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे कभी-कभी पुस्तकें पढ़ते हैं, जो यह दर्शाता है कि यह वर्ग पूरी तरह साहित्य से दूर नहीं हुआ है, किंतु नियमित पठन की आदत उनमें नहीं है। यह समूह समयाभाव, तकनीकी व्यस्तता या मोबाइल आधारित सामग्री के कारण पुस्तक पठन को सीमित रूप में अपनाता है। इसके अतिरिक्त 19 प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्पष्ट रूप से कहा कि वे अब पुस्तकें नहीं पढ़ते। यह आँकड़ा चिंताजनक है क्योंकि यह बताता है कि डिजिटल माध्यमों की सहजता और तात्कालिक आकर्षण ने साहित्यिक पुस्तकों के प्रति युवाओं की रुचि को कम किया है।

इस प्रकार यह विश्लेषण यह संकेत देता है कि यद्यपि कुछ युवा अब भी पुस्तक-पठन की परंपरा को बनाए हुए हैं, परंतु एक बड़ा वर्ग धीरे-धीरे डिजिटल मनोरंजन, सामाजिक माध्यमों और त्वरित जानकारी के स्रोतों की ओर आकर्षित हो रहा है। यह प्रवृत्ति हिंदी साहित्य के भविष्य के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करती है, क्योंकि नियमित पठन की संस्कृति में गिरावट आने से साहित्यिक गहराई और संवेदनशीलता का क्षय हो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि साहित्यिक पुस्तकों को आधुनिक तकनीकी माध्यमों के अनुरूप बनाकर युवाओं के बीच पुनः लोकप्रिय किया जाए।

प्रश्न: 2. आप कौन-से माध्यम में पुस्तकें पढ़ना पसंद करते हैं?

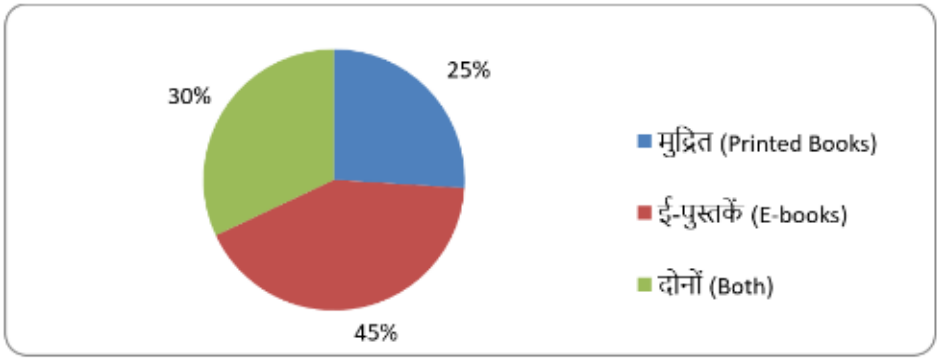

विश्लेषण

इस प्रश्न का उद्देश्य यह जानना था कि युवा पाठक आज के डिजिटल परिवेश में किस माध्यम से पुस्तकें पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। 95 प्रतिभागियों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर तैयार किए गए चित्र से स्पष्ट होता है कि 45 प्रतिशत प्रतिभागी ई-पुस्तकें पढ़ना पसंद करते हैं, जबकि 30 प्रतिशत प्रतिभागी दोनों माध्यमों (मुद्रित और ई-पुस्तक) का उपयोग करते हैं। केवल 25 प्रतिशत प्रतिभागियों ने पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों को अपनी प्राथमिकता बताया। यह आँकड़े इस बात की ओर संकेत करते हैं कि तकनीकी युग में युवाओं का झुकाव डिजिटल पठन की ओर बढ़ रहा है। ई-पुस्तकों की सहज उपलब्धता, कम लागत और पोर्टेबल स्वरूप ने उन्हें अधिक सुविधाजनक बनाया है। फिर भी, एक वर्ग ऐसा भी है जो मुद्रित पुस्तकों के पठन को अधिक आत्मीय और गहराईपूर्ण अनुभव मानता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग ने पठन माध्यमों में विविधता तो दी है, परंतु पारंपरिक पठन का आकर्षण अब भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

प्रश्न: 3. पिछले 6 महीनों में आपने कितनी हिंदी साहित्यिक पुस्तकें पढ़ी हैं?

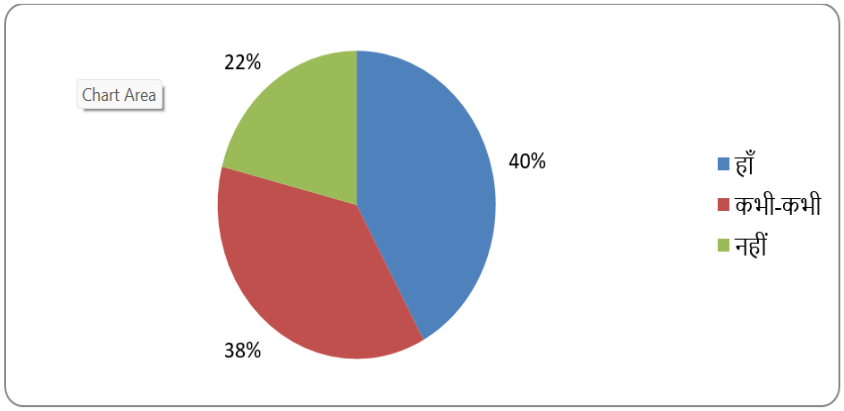

विश्लेषण

उपरोक्त चार्ट से स्पष्ट होता है कि 95 प्रतिभागियों में से 40 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि उन्होंने पिछले छह महीनों में हिंदी साहित्यिक पुस्तकें पढ़ी हैं। 38 प्रतिशत प्रतिभागियों ने कहा कि वे कभी-कभी पढ़ते हैं, जबकि 22 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि उन्होंने इस अवधि में कोई भी पुस्तक नहीं पढ़ी। यह स्थिति दर्शाती है कि यद्यपि हिंदी साहित्य के प्रति युवाओं में रुचि बनी हुई है, परंतु नियमित पठन की प्रवृत्ति में कमी आई है। डिजिटल मनोरंजन, समयाभाव और मोबाइल सामग्री की सहज उपलब्धता ने पारंपरिक पुस्तक-पठन की निरंतरता को प्रभावित किया है। इसके बावजूद यह तथ्य संतोषजनक है कि एक बड़ा वर्ग अभी भी हिंदी साहित्यिक पुस्तकों के अध्ययन को अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक अभिरुचि का हिस्सा मानता है।

प्रश्न: 4. ई-पुस्तकें पढ़ने का आपका प्रमुख कारण क्या है?

विश्लेषण

चार्ट से स्पष्ट होता है कि अधिकतर प्रतिभागी ई-पुस्तकों को उनकी सहजता और सुविधा (37%) के कारण चुनते हैं। मोबाइल या लैपटॉप पर कहीं भी और कभी भी पढ़ पाने की यह सरलता आज के तेज़ जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है। मुफ़्त उपलब्धता (32%) भी युवाओं के बीच एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में सामने आई, जिससे आर्थिक रूप से सीमित पाठकों को भी साहित्य तक पहुँच संभव हुई है। कुछ उत्तरदाताओं (21%) ने आधुनिकता को इसका कारण बताया — उनके लिए डिजिटल पठन एक समसामयिक जीवनशैली का प्रतीक है। वहीं 10 प्रतिशत लोगों ने अन्य व्यक्तिगत कारणों को ज़िम्मेदार माना, जैसे समय की कमी या सुविधा की आदत।

यह विश्लेषण दर्शाता है कि आज की युवा पीढ़ी के लिए पठन अब केवल ज्ञान का माध्यम नहीं रहा, बल्कि सुविधा और तकनीकी सहजता से जुड़ा एक अनुभव बन गया है। डिजिटल साधनों ने जहाँ पढ़ने के नए अवसर खोले हैं, वहीं उन्होंने पारंपरिक पठन की आत्मीयता को भी चुनौती दी है।

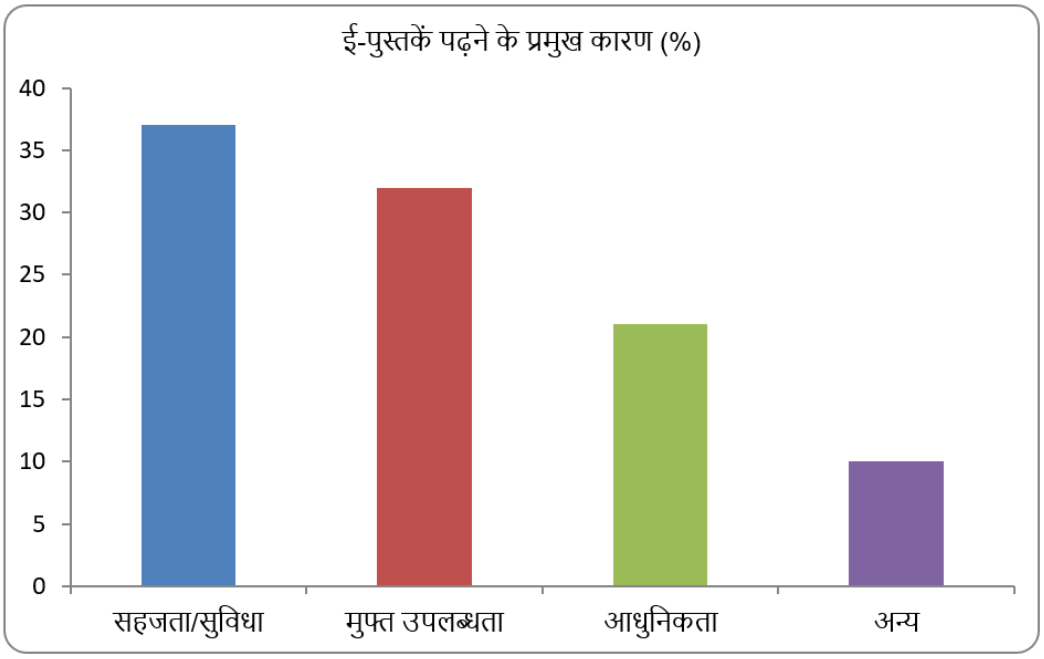

प्रश्न: **5. क्या आपको लगता है कि ई-पुस्तकों के कारण आपकी साहित्यिक रुचि बढ़ी है या घटी है?**

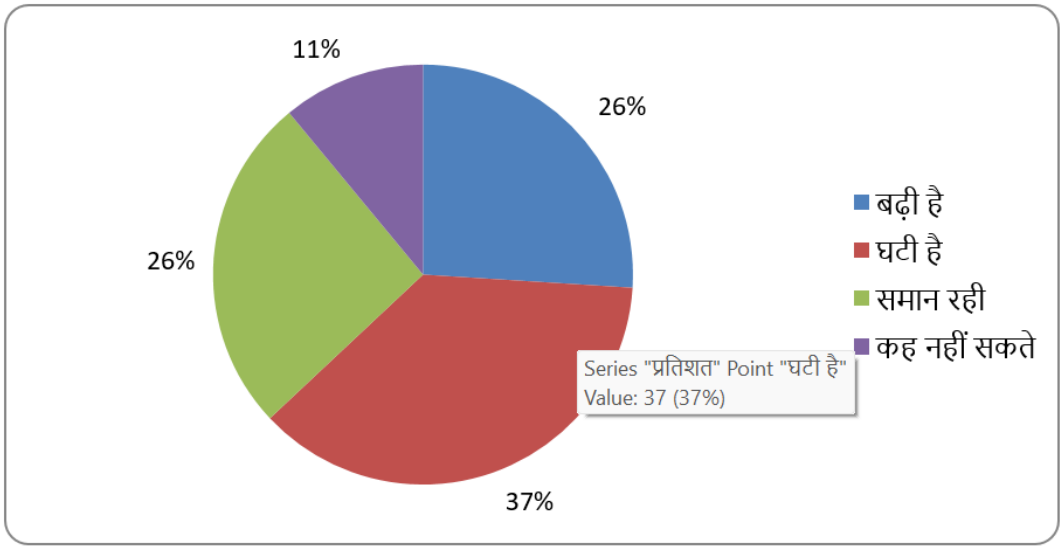

विश्लेषण

चार्ट के अनुसार, प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएँ मिश्रित रूप में सामने आईं। 37 प्रतिशत युवाओं ने माना कि ई-पुस्तकों के कारण उनकी साहित्यिक रुचि घटी है, जबकि 26 प्रतिशत ने कहा कि उनकी रुचि बढ़ी है। इसी अनुपात में 26 प्रतिशत प्रतिभागियों ने बताया कि उनकी रुचि समान रही, और 11 प्रतिशत ने कहा कि वे कह नहीं सकते।

यह परिणाम यह दर्शाता है कि जहाँ कुछ युवाओं ने डिजिटल माध्यमों को साहित्य के निकट लाने वाला माना है, वहीं अधिकतर का अनुभव यह रहा कि ई-पुस्तकों ने साहित्य से भावनात्मक जुड़ाव और एकाग्रता को कम किया है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तकनीक ने पढ़ने की पहुँच तो बढ़ाई है, पर साहित्य की गहराई और आत्मीयता पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

प्रश्न 6: हिंदी साहित्य के किस प्रकार के लेखन में आपकी रुचि है?

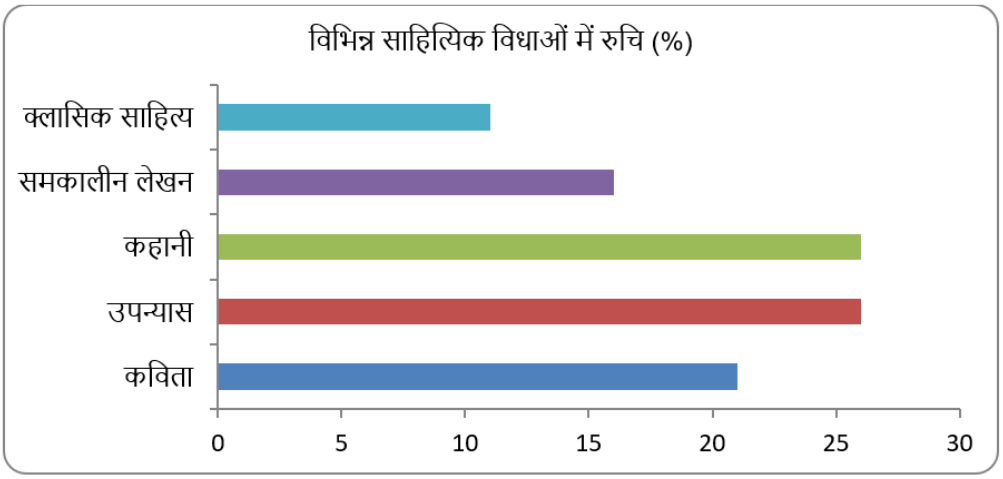

विश्लेषण

चार्ट से स्पष्ट होता है कि प्रतिभागियों की रुचि हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में विविध रूप से विभाजित है। सर्वाधिक 28 प्रतिशत प्रतिभागियों ने उपन्यास को अपनी पसंद बताया, जो यह दर्शाता है कि लंबी कथा-रचना अब भी युवाओं को आकर्षित करती है। इसके बाद 26 प्रतिशत प्रतिभागी कहानी विधा के प्रति अधिक रुचि रखते हैं, क्योंकि इसमें जीवन की यथार्थपरक झलक और सरलता दोनों मिलती हैं। कविता के प्रति 22 प्रतिशत युवाओं ने अपनी अभिरुचि दिखाई, जो साहित्य में भावनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रति लगाव को दर्शाता है। वहीं समकालीन लेखन में 15 प्रतिशत प्रतिभागियों की रुचि रही, जो आधुनिक विषयों और बदलते समाज को समझने की जिज्ञासा को प्रकट करती है। सबसे कम, मात्र 10 प्रतिशत प्रतिभागियों ने क्लासिक साहित्य को अपनी प्राथमिकता बताया।

यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि आज के युवा अधिकतर समकालीन विषयों, सरल भाषा और कथात्मक शैली वाले साहित्य को पसंद करते हैं, जबकि पारंपरिक या शास्त्रीय साहित्य के प्रति उनकी रुचि अपेक्षाकृत कम होती जा रही है।

प्रश्न: 7. आप साहित्यिक पुस्तकों के बजाय किस माध्यम को अधिक पढ़ते हैं?

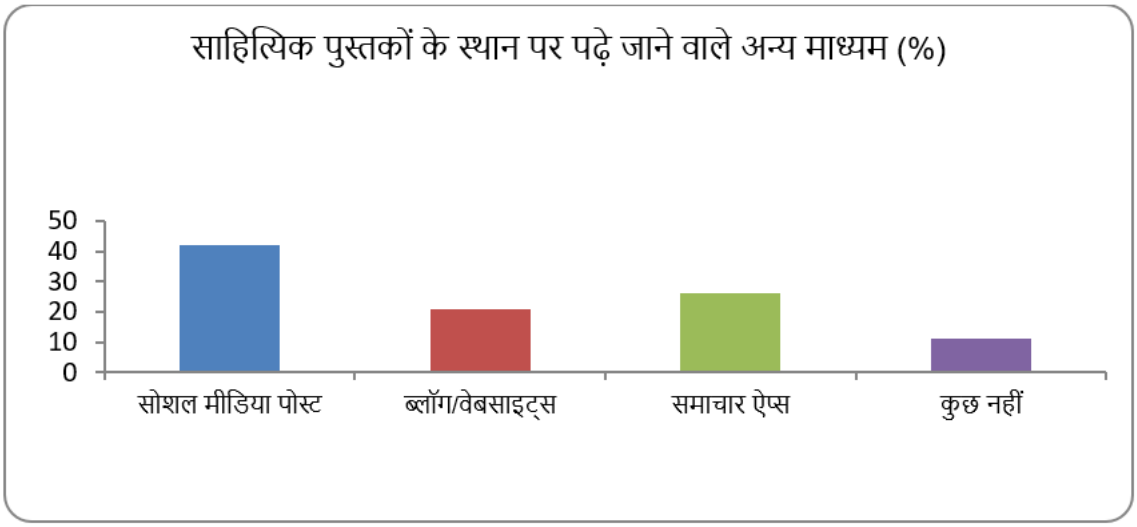

विश्लेषण

चार्ट के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश युवाओं की पढ़ने की रुचि अब साहित्यिक पुस्तकों से हटकर डिजिटल माध्यमों की ओर स्थानांतरित हो रही है। 41 प्रतिशत प्रतिभागियों ने बताया कि वे सोशल मीडिया पोस्ट को अधिक पढ़ते हैं, जो त्वरित और मनोरंजक सामग्री के कारण उन्हें आकर्षित करती हैं। समाचार ऐप्स को 27 प्रतिशत प्रतिभागियों ने प्राथमिकता दी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जानकारी प्राप्त करने की प्रवृत्ति अब साहित्यिक गहराई से अधिक तात्कालिकता पर केंद्रित है।

इसके अतिरिक्त ब्लॉग या वेबसाइट्स पढ़ने वालों की संख्या 21 प्रतिशत रही, जो यह दर्शाती है कि कुछ युवा अब भी लेखन और विचारपरक सामग्री में रुचि रखते हैं। वहीं 11 प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्वीकार किया कि वे साहित्यिक या अन्य किसी भी प्रकार की सामग्री नहीं पढ़ते।

यह विश्लेषण यह संकेत देता है कि आधुनिक डिजिटल जीवनशैली ने युवाओं की पठन आदतों को बदल दिया है। सोशल मीडिया और डिजिटल सामग्री की तीव्रता ने साहित्यिक पुस्तकों के गहराईपूर्ण अध्ययन को पीछे धकेल दिया है, जिससे हिंदी साहित्य के प्रति भावनात्मक जुड़ाव में कमी आई है।

प्रश्न: 8. क्या आप हिंदी साहित्य को स्कूल/कॉलेज की पढ़ाई से अलग पढ़ते हैं?

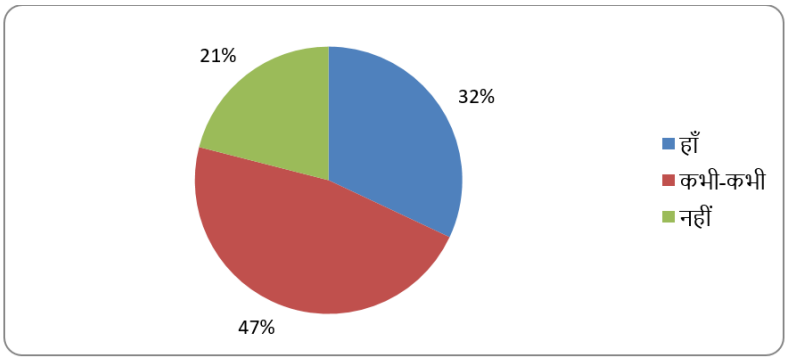

विश्लेषण

चार्ट से प्राप्त आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि आज के युवाओं में अकादमिक अध्ययन के अतिरिक्त हिंदी साहित्य को पढ़ने की प्रवृत्ति सीमित होती जा रही है। सर्वेक्षण में शामिल 95 प्रतिभागियों में से 32 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वे हिंदी साहित्य को पढ़ाई से अलग भी पढ़ते हैं, जबकि सबसे बड़ा वर्ग 47 प्रतिशत ने कहा कि वे कभी-कभी ही ऐसा करते हैं। इसके विपरीत 21 प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्वीकार किया कि वे स्कूल या कॉलेज के पाठ्यक्रम से बाहर हिंदी साहित्य नहीं पढ़ते। यह स्थिति इस बात की ओर संकेत करती है कि युवाओं में साहित्य को ज्ञान और संस्कृति के स्वतंत्र साधन के रूप में देखने की प्रवृत्ति कम हो रही है। अब अधिकांश युवा केवल परीक्षा या पाठ्यक्रम की सीमा तक ही साहित्यिक रचनाओं से परिचित होते हैं। डिजिटल माध्यमों, समयाभाव और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा ने साहित्य के प्रति एकाग्रता को प्रभावित किया है। फिर भी, 32 प्रतिशत का वर्ग आशा की किरण है, जो यह दर्शाता है कि हिंदी साहित्य आज भी कुछ युवाओं के लिए आत्मिक प्रेरणा और बौद्धिक संतोष का स्रोत बना हुआ है।

प्रश्न: 9. ई-पुस्तकों की क्या विशेषता आपको सबसे अधिक प्रभावित करती है?

विश्लेषण

उपरोक्त चार्ट के अनुसार यह पाया गया कि अधिकांश प्रतिभागी पोर्टेबिलिटी (कहीं भी पढ़ सकने की सुविधा) को ई-पुस्तकों की सबसे बड़ी विशेषता मानते हैं। 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे प्रमुख कारण बताया, क्योंकि मोबाइल या टैबलेट के माध्यम से कहीं भी और कभी भी पढ़ने की स्वतंत्रता उन्हें आकर्षित करती है। 30 प्रतिशत प्रतिभागियों ने विविधता को महत्वपूर्ण माना, क्योंकि ई-पुस्तकों में विषयों और शैलियों की विशाल उपलब्धता होती है। वहीं 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कम लागत या मुफ्त उपलब्धता को सबसे बड़ा लाभ बताया। सिर्फ 10 प्रतिशत प्रतिभागियों ने कहा कि ई-पुस्तकों में उन्हें कोई विशेष आकर्षण नहीं दिखता। यह परिणाम इस ओर संकेत करता है कि युवाओं के लिए सुविधा, उपलब्धता और विविधता साहित्य के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डिजिटल मंचों ने न केवल पढ़ने की पहुँच को सरल बनाया है, बल्कि पठन संस्कृति को नई दिशा भी दी है।

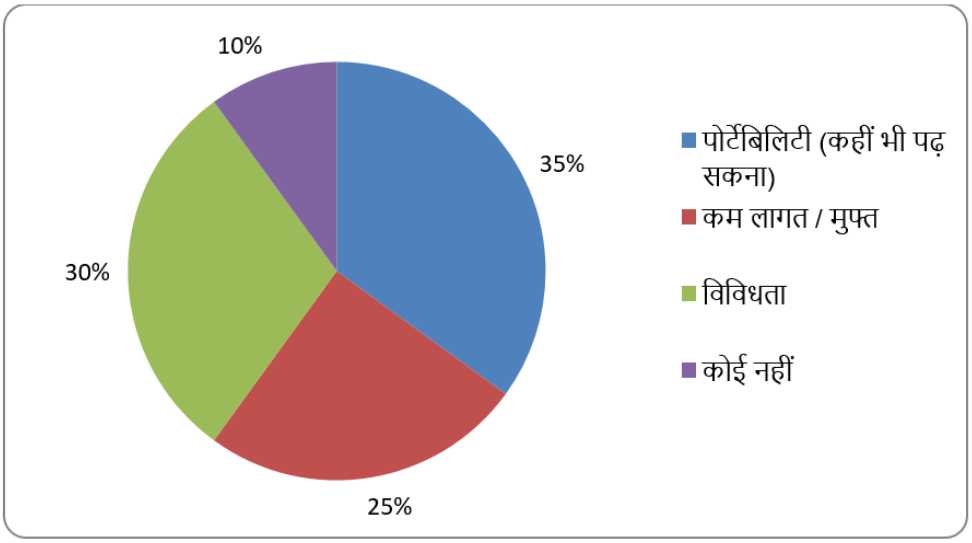

प्रश्न: 10. क्या आप मानते हैं कि मुद्रित पुस्तकों का हिंदी साहित्य युवाओं में फिर से लोकप्रिय बनाया जा सकता है?

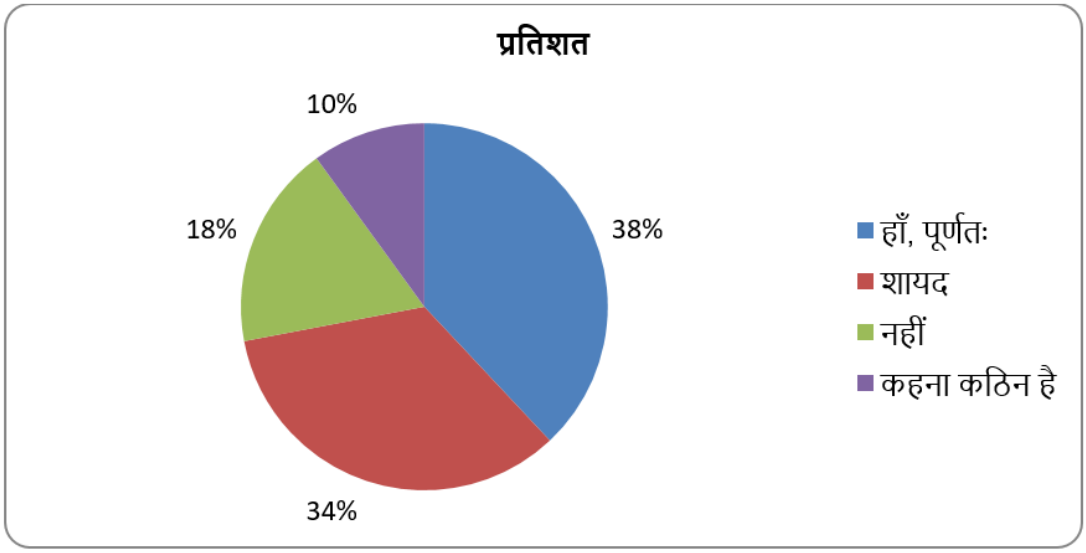

विश्लेषण

इस सर्वेक्षण के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोग मानते हैं कि मुद्रित हिंदी साहित्य को युवाओं में फिर से लोकप्रिय बनाया जा सकता है। कुल 38% प्रतिभागियों ने पूर्णतः सहमति जताई है कि यह संभव है, जबकि 34% ने "शायद" कहा है, जो यह दर्शाता है कि वे इस दिशा में संभावनाएँ तो देखते हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि इसके लिए कुछ विशेष प्रयासों की आवश्यकता होगी — जैसे आधुनिक माध्यमों का उपयोग, आकर्षक प्रस्तुति और प्रचार। वहीं, 18% लोगों का मानना है कि आज के डिजिटल युग में मुद्रित पुस्तकों को फिर से लोकप्रिय बनाना कठिन है। इसके अलावा 10% प्रतिभागियों ने "कहना कठिन है" का विकल्प चुना, जो यह दिखाता है कि कुछ लोग इस विषय पर स्पष्ट राय नहीं बना पाए हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अधिकांश लोगों में अब भी यह विश्वास है कि यदि सही दिशा में कदम उठाए जाएँ, तो मुद्रित हिंदी साहित्य को युवाओं के बीच पुनः लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

वर्तमान शोध से यह तथ्य स्पष्ट रूप से उजागर होता है कि डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य की पठन-संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। तकनीकी प्रगति ने जहाँ साहित्य तक पहुँच को सरल, त्वरित और व्यापक बनाया है, वहीं इसने पारंपरिक पठन-पद्धति की आत्मीयता और गहराई को भी कम किया है। सर्वेक्षण के 95 प्रतिभागियों से प्राप्त उत्तरों से यह पता चला कि युवाओं का झुकाव अब मुद्रित पुस्तकों की अपेक्षा ई-पुस्तकों और ऑनलाइन सामग्री की ओर अधिक है। सुविधा, कम लागत और आधुनिकता की भावना ने ई-पुस्तकों को लोकप्रिय बनाया है, परंतु इसके परिणामस्वरूप नियमित पठन की आदत में कमी और साहित्यिक एकाग्रता में गिरावट आई है। फिर भी यह भी सत्य है कि हिंदी साहित्य का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। एक बड़ा वर्ग आज भी साहित्यिक पुस्तकों को आत्मिक संतोष और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम मानता है। युवा वर्ग में यह चेतना अभी जीवित है कि साहित्य केवल जानकारी नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों और संवेदनाओं का दर्पण है। यह शोध यह इंगित करता है कि हिंदी साहित्य की उपेक्षा का कारण उसकी अप्रासंगिकता नहीं, बल्कि प्रस्तुति के माध्यमों का परिवर्तन है। यदि साहित्य को आधुनिक तकनीकी स्वरूप में प्रस्तुत किया जाए, तो यह पुनः युवाओं के बीच लोकप्रिय हो सकता है।

डिजिटल माध्यमों के युग में आवश्यक है कि साहित्य को केवल पारंपरिक पुस्तकों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उसे ई-पुस्तकों, ऑडियोबुक्स, मोबाइल एप्लिकेशन और सामाजिक मंचों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए। शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे हिंदी साहित्य को पढ़ाने के पारंपरिक ढर्रे से हटकर उसे जीवन से जोड़ने वाले व्यावहारिक और रचनात्मक रूपों में प्रस्तुत करें। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों पर साहित्यिक अभियानों, ऑनलाइन बुक क्लबों, और पठन प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं में पुनः साहित्यिक चेतना जगाई जा सकती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य आज किसी संकट में नहीं, बल्कि एक संक्रमणकाल से गुजर रहा है। यह संक्रमण अवसर का रूप ले सकता है, यदि साहित्य और तकनीक का संतुलित समन्वय किया जाए। डिजिटल युग में हिंदी साहित्य को केवल परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि आधुनिक संवेदना का जीवंत माध्यम बनाना ही समय की माँग है। जब साहित्य तकनीक की भाषा में बोलेगा, तब निश्चय ही वह युवाओं के मन में पुनः अपना स्थान स्थापित करेगा और भारतीय सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा देगा।

संदर्भ सूची

1. सिन्हा, नलिनी. डिजिटल माध्यम और हिंदी साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018।
2. राय, गोपाल. हिंदी साहित्य का समकालीन परिप्रेक्ष्य और तकनीकी प्रभाव. वाराणसी: भारती बुक डिपो, 2019।
3. मिश्रा, सुधा. डिजिटल युग में साहित्यिक चेतना का स्वरूप. इलाहाबाद: साहित्य संगम, 2020।
4. श्रीवास्तव, राकेश. हिंदी साहित्य और तकनीकी बदलाव. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021।
5. लोन, फैयाज़ अहमद, और रेफहात-उन-निसा शाह. "भारतीय युवाओं की पठन प्रवृत्तियाँ: एक सर्वेक्षण अध्ययन." भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, खंड 14, अंक 3, 2019, पृ. 45–59।
6. सुभवीरापंडियन, ए., और प्रियांका सिन्हा. "डिजिटल साक्षरता और छात्रों की पठन आदतें: एक सर्वेक्षण अध्ययन." शैक्षणिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 8, अंक 2, 2022, पृ. 22–31।
7. कुमार, सुधीर. डिजिटल माध्यमों में हिंदी साहित्य की उपस्थिति. भोपाल: हिंदी अकादमी प्रकाशन, 2021।
8. पाठक, सुषमा. "नए मीडिया युग में हिंदी साहित्य के बदलते पाठक." नवलेखन वार्षिकी, खंड 12, अंक 1, 2022, पृ. 78–90।
9. शर्मा, राजनी. आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीकी चुनौतियाँ. लखनऊ: भारतीय भाषा परिषद, 2023।